

असम विधानसभा के उद्घाटन कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

असम विधान सभा के माननीय अध्यक्ष, श्री विश्वजीत दैमारी जी;
असम के माननीय मुख्यमंत्री, डॉ. हिमंता बिस्वा सरमा जी;
विधान सभा के माननीय उपाध्यक्ष, डॉ. नुमल मोमीन जी;
नेता प्रतिपक्ष, श्री देबब्रत सैकिया जी;
असम विधान सभा के माननीय सदस्यगण;
विशिष्ट अतिथिगण और विधान सभा के अधिकारीगण,
देवियो और सज्जनो:

संस्कृति, सभ्यता, शक्ति और भक्ति की महान भूमि असम को कोटि-कोटि नमन करता हूँ। इस मनोहारी प्रदेश में आज आप सबके बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

असम राज्य विधान मंडल के नए भवन का उद्घाटन आज एक ऐतिहासिक अवसर है, और मैं इस दिन के लिए आप सभी को, असम की सम्पूर्ण जनता को बधाई देता हूँ।

देश की आजादी से पहले वर्ष 1937 में असम विधान सभा अस्तित्व में आई थी, और इसकी पहली बैठक जिस भवन में हुई थी वह आज शिलांग का विधान सभा भवन है। स्वाधीनता के बाद कई अवसरों पर असम से अन्य राज्यों का गठन हुआ, और समय-समय पर यहाँ की विधायी संरचना में बदलाव हुआ।

शिलांग से दिसपुर होते हुई, गुवाहाटी तक की असम विधानसभा की यह यात्रा हमारे लोकतांत्रिक इतिहास में प्रमुख महत्व रखती है।

आज प्रदेश की जनता को समर्पित होने जा रहा विधानसभा का यह नया भवन आम जनमानस के कल्याण का प्रतीक है।

असम विधानसभा के माननीय अध्यक्ष श्री विश्वजीत दैमारी जी और मुख्यमंत्री डॉ. हिमंता बिस्वा सरमा जी का साधुवाद, जिनके सक्षम नेतृत्व व मार्गदर्शन में इस नए विधायी भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ है।

आज इस अवसर पर मैं उन सभी महान विभूतियों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जिनका असम के विकास और इसके गौरव को बढ़ाने में प्रमुख योगदान रहा है।

असम विधान सभा का यह नव निर्मित भवन आधुनिकता और विरासत का अद्भुत संगम है। पूर्वोत्तर भारत की जो विविधता है, इस नए भवन में उन सबको समाहित किया गया है। मेरा विश्वास है कि ये नया विधानसभा भवन, असम के विकास के संकल्प को सिद्धि की ओर ले जाने वाला बनेगा, आत्मनिर्भर असम के उदय का साक्षी बनेगा।

आज इस नये भवन का लोकार्पण तो हो रहा है लेकिन विधानसभा के पुराने भवन का असम की लोकतांत्रिक यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

पुराना भवन अनेक परिवर्तनकारी कानूनों का साक्षी रहा है। इस भवन में असम की जनता के कल्याण के लिए चर्चा और संवाद के माध्यम से अनेक कानून तैयार हुए हैं। इस पुराने भवन ने असम प्रदेश में जनकल्याण को मजबूती दी है, लोकतंत्र के आधार को मजबूत किया है। आजादी के बाद इन 75 वर्षों में असम में जो सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हुआ है, वह इस विधान सभा भवन के माध्यम से ही हुआ है।

लेकिन परिवर्तन जीवन का सतत सत्य है। इस नये युग में जब हम नए विचार, नए दृष्टिकोण, नए सपने, नई आकांक्षाओं और नए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए नए रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं तो उन नए लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, नए दृष्टिकोणों को साकार करने के लिए नए साधन-संसाधन भी आवश्यक हो जाते हैं।

असम विधानसभा के वर्तमान भवन से नए भवन में प्रवेश हमारे लिए पुरातन से नवीन की यात्रा के आरंभ का दिन है।

नए रास्तों पर चलकर ही नए कीर्तिमान गढ़े जाते हैं, नये परिवर्तनों की आधारशिला रखी जाती है। आज जब नया असम, नये संकल्प से, नये विश्वास से, नये जोश और उमंग से आगे

बढ़ रहा है, नए लक्ष्य तय कर रहा है, तो यह नया भवन इस नयी यात्रा का सशक्त माध्यम बनेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

मुझे यह भी विश्वास है कि जिस तरह प्रदेश की विधायिका के वर्तमान भवन ने इस प्रदेश के विकास में, यहाँ के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है; नए भवन में उससे भी अधिक सामर्थ्य के साथ हम प्रदेश की प्रगति का पथ सुनिश्चित करेंगे।

नया भवन आज की आवश्यकताओं, आज की तकनीकी के आधार पर निर्मित है। इस नए भवन में प्राकृतिक रोशनी की समुचित व्यवस्था है।

इसमें विधायकों के बैठने के लिए पर्याप्त स्थान तैयार किया गया है। वर्तमान समय में हमारा विधायी कामकाज बहुत सीमा तक डिजिटल स्वरूप में होने लगा है। मुझे बताया गया है कि इस भवन में ऐसी सभी व्यवस्थाएँ की गई हैं, जिससे सदन के सदस्य यहाँ अधिक क्षमता और रचनात्मकता के साथ प्रभावी कार्य कर पाएँगे।

भारत आज वैश्विक लोकतंत्र का सबसे प्रमुख आधार है। लोकतंत्र हमारे लिए सिर्फ एक सरकार चलाने की व्यवस्था नहीं है, यह हमारा संस्कार है, हमारी परंपरा है, हमारी जीवनशैली है। और आज पूरा विश्व लोकतंत्र को शासन की सर्वश्रेष्ठ पद्धति मान रहा है।

अभी कुछ ही दिनों पहले आपने देखा कि किस प्रकार नये भारत की आकांक्षाओं का साकार स्वरूप हमारी संसद का नया भवन बनकर तैयार हुआ है। पूरा देश भारतीय लोकतंत्र के एक स्वर्णिम क्षण का साक्षी बना, जब हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था, हमारी संसद का नया भवन देश को लोकार्पित किया।

जिस प्रकार भारत का नया संसद भवन अत्याधुनिक तकनीक के साथ भारतीय वास्तुकला, संस्कृति और परिश्रम का प्रतीक है, आत्मनिर्भर भारत का प्रतीक है उसी प्रकार असम विधान सभा का नया भवन भी यहाँ की संस्कृति की विविधता, यहाँ की समृद्ध विरासत को सजीव करने के साथ साथ आधुनिक सुविधाओं से युक्त भी है।

लोकतंत्र की हमारी सर्वोच्च संस्थाएँ मात्र भौतिक इमारतें नहीं होती, बल्कि वे पवित्र स्थान होती हैं जहाँ जनता के अभावों, उनकी समस्याओं का समाधान निकाला जाता है,

लोकतंत्र की भावना जीवंत होती है। इन भवनों में हम जो चर्चा संवाद करते हैं, उनका हमारे नागरिकों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमारा यह दायित्व है कि हम विवेक, संवेदना और पूरी निष्ठा के साथ फैसले करें। सदनों के ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है।

लेकिन आजकल देखा जाता है कि हमारे सदनों में असहमति और विरोध प्रदर्शित करने के लिए अमर्यादित एवं अशोभनीय तरीकों का, नियोजित व्यवधान का इस्तेमाल किया जाता है।

जनप्रतिनिधि सदन के वेल में आकर नारेबाजी करते हैं, तख्तिरियाँ दिखाते हैं और अनुचित भाषा का प्रयोग करते हैं। हमें मंथन करना चाहिए कि हम अपने सदनों को किस दिशा में लेकर जा रहे हैं!

हमें यह विचार करना चाहिए कि हमें जनता ने किस उद्देश्य से चुनकर भेजा है। जनता की हमसे आशा रहती है कि हम सदन के अंदर उनकी समस्याओं, अभावों, कठिनाइयों पर चर्चा करेंगे, ताकि उनका एक सार्थक समाधान निकल सके।

जनप्रतिनिधि के रूप में अपने मतदाताओं के प्रति हमारा दायित्व है कि हम अपने लोकतंत्र को सशक्त बनाने की दिशा में काम करें।

हमारे सदन जीवंत और चर्चा संवाद का केंद्र बनें, ताकि विधायिका के रूप में हम शासन को जवाबदेह व पारदर्शी बना सकें। सदनों को गरिमापूर्वक चलाने का दायित्व पक्ष-प्रतिपक्ष सभी के सदस्यों का है।

हमारा लोकतंत्र तभी सुदृढ़ हो पाएगा, जब हम अपने सदनों को चर्चा और संवाद का केंद्र बनाएं, सदन को लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं का केंद्र बनाएं, अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की समस्याओं, कठिनाइयों और अभावों को दूर करने का केंद्र बनाएं, जनता को उनके संवैधानिक अधिकारों का केंद्र बनायें, न्याय और समानता पर आधारित शासन व्यवस्था का केंद्र बनायें। जनता की हर आशा, हर उम्मीद हमारे सदनों के माध्यम से पूरी हो। यदि हम लोकतंत्र की जननी हैं, तो यह हमारे सदनों की कार्य प्रणाली में दिखना चाहिये।

हमारे सदन नीतियाँ और विधि निर्माण के माध्यम से शासन में पारदर्शिता व जवाबदेही लाने, नीतियों की समीक्षा करने और सकारात्मक सुझाव देने के पावन मंच हैं।

सदनों में देश और प्रदेश के विकास के लिए बजट पर स्वस्थ चर्चा होती है, विचार मंथन होता है। जनहित के मुद्दों पर संवाद होता है, जनता की मुश्किलों को शासन के समक्ष रखा जाता है, उनका समाधान निकाला जाता है। हमारे सदनों की सफलता इसी में निहित हैं कि वे सार्थक चर्चा संवाद के केंद्र बनें।

मुझे विश्वास है कि यह नया विधान सभा भवन आत्मनिर्भर असम का साक्षी बनेगा। यह नया विधान सभा भवन योजना को यथार्थ से, नीति को निर्माण से, इच्छा शक्ति को क्रिया शक्ति से, संकल्प को सिद्धि से जोड़ने वाली अहम कड़ी साबित होगा। असम विधान सभा का ये नया भवन यहाँ के महापुरुषों, स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करने का माध्यम बनेगा।

आप जब इस नये भवन में प्रवेश करें तो इस भावना, इस सोच के साथ करें कि यहां होने वाला हर निर्णय, आने वाले भविष्य को सजाने-संवारने वाला है।

यहां होने वाला हर निर्णय, आने वाली पीढ़ियों को सशक्त करने वाला होगा। यहां होने वाला हर निर्णय, असम प्रदेश के उज्ज्वल भविष्य का आधार बनेगा। इस नए भवन में बनने वाले नए कानून विकसित असम बनाएंगे।

मैं समस्त असम वासियों को लोकतंत्र के इस नए मंदिर, इस नए परिसर के निर्माण के लिए फिर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

मेरी कामना है कि आप सभी मिलकर एक सुदृढ़, समावेशी और समृद्ध असम का निर्माण करें, जो समस्त राष्ट्र के सामने प्रगति की मिसाल कायम करें।
